कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय ...हिन्दी...

परीक्षा का दिन ...शुक्रवार...

दिनांक ...16-3-19...

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - 1

गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए !

(1) गद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक है ! – आजादी में नारी का योगदान । की लड़ाई

(2) आधुनिक काल में नारी एक बार फिर से अपनी पूरी क्षमता, शक्ति और साहस के साथ समाज में दिखाई देने लगी है । शिक्षा के प्रचार- प्रसार से वह पूरी तरह आत्म आत्मविश्वास से भर गई । आज के समय में नारियों का विशे विशेष योगदान है ।

(3) आप आज़ादी की लड़ाई का उदाहरण देख लिखि लीजिए । भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, अरूणा आसफ अली, कैप्टन लक्ष्मी सहगल आदि बहुत सारे नाम आ हमारे जेहन में आते जाएंगे । महिलाएं अपना घर-बार छोड़कर देश की आजादी के लिए संघर्ष करती है- चाहे वे गांव से हो, कस्बे से, शहर से, या कोई महानगर की हो सभी का आजादी में विशेष योगदान होता है ।

निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

4) कवि में कवि कहता है कि हे सूरज। तुम सोए हुए आदमी को जगाओ । और कवि पवन (हवा) से कहता है कि आप उस आदमी को जगाओ । अगर उसे सही समय पर नहीं जगाया तो वह सपनो में खोया पड़ा रहेगा । और वह कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाएगा ।

5) कवि कहता है कि अपन अगर आपने इस सोए हुए आदम

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

को अभी नहीं जगाया तो वह सही समय पर उठ नहीं पाएगा । वह सिर्फ सपनों में खोया रहेगा । यह बेवक्त जागेगा तब तक बाकी लोग उससे आगे निकल चुके होंगे । और जो इनसे आगे निकल गए उन्हे देखकर वह घबरा जाता है ।

6) कवि कहता है कि जो व्यक्ति घबरा कर भागता है वह इसलिए घबराता है कि बाकी सभी उससे आगे निकल गए हैं और वह पीछे रह गया है । इसलिए वह मुसीबते झेलनी नहीं चाहता है और डरता है । लेकिन क्षिप्र गति का अर्थ है कि व्यक्ति सही समय का इंतजार करता है । वह सही समय पर चौकन्ना हो जाता है । इस प्रकार घबरा के भागने और क्षिप्र गति में अन्तर है ।

खण्ड - 3

9) क्रिया की परिभाषा → वाक्य में जिस शब्द से किसी कार्य का करना या होना पाया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं ।
जैसे → राम पढ़ता है ।

★ कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं ।

1) अकर्मक क्रिया 2) सकर्मक क्रिया

1) अकर्मक क्रिया → जिस वाक्य में कर्म प्रयुक्त नहीं होता

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

केवल कर्ता ही होता है उसे अकर्मक क्रिया कहते है ।

2) सकर्मक क्रिया → जिस वाक्य में कर्म प्रयुक्त होता है अर्थात् कर्ता और कर्म दोनो आते है उसे सकर्मक क्रिया कहते है

10) " पत्र मोहन के द्वारा लिखा गया "

कारक → करण कारक

काल → भूतकाल

वाच्य → कर्म वाच्य

11) 'गजानन' में प्रयुक्त समास है "बहुव्रीहि समास" ।

गजानन → गज है आनन जिसका वह ।

बहुव्रीहि समास → इस समास में दोनों ही पद प्रधान नहीं होते है अर्थात् कोई अन्य पद प्रधान होता है ।

→ इस समास में विग्रह करते समय वाला है जिसका, जिसकी, जिसके वह आदि शब्दों का प्रयोग होता है ।

उदाहरण → लम्बोदर → लम्बा है उदर जिसका वह
दशानन → दश है आनन जिसके ऐसा वह

12) वाक्य शुद्धि :

(क) मेरे को अभी जाना है । → मुझे अभी जाना है ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ख) मेरे पास केवल मात्र पचास रूपये हैं ।
⇒ मेरे पास केवल पचास रूपये हैं ।

13) मुहावरों का अर्थ लिखिए ।

(क) अगर-मगर करना → बहाने बनाना ।

(ख) आपे से बाहर होना → क्रोधित होना ।

14) "अंधेर नगरी चौपट राजा" लोकोक्ति का अर्थ
⇒ प्रशासन की अयोग्यता से सभी जगह अराजकता आ जाना

खण्ड - 4

15) निम्नलिखित पद्यांश की व्याख्या कीजिए :

1. बूझत .... भोरी ॥

प्रसंग → प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक "क्षितिज" से सूरदास द्वारा रचित पदों से लिया गया है। इसमें कवि बता रहा है कि रसिक स्वभाव वाले लोगों को मित्रता करना बहुत पसंद होता है। श्रीकृष्ण राधा के साथ खेलना चाहते हैं लेकिन गौरी उसके उनके साथ खेलने में रुची नहीं दिखाती है ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्याख्या :- श्रीकृष्ण भोली और सरल स्वभाव वाली राधा से पूछते है हे गौरी तु कौन है ?, तु कहाँ रहती है ?, तु किसकी बेटी है ? तुझे आज से पहले इस ब्रज भूमि की गलियों में नहीं देखा ? तब गौरी इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहती है हमें ब्रज भूमि पर आने की क्या आवश्यकता हम तो हमारे घर के आँगन में खेला करती है । लेकिन हमने सुन रखा था कि नन्द का छोटा लड़का दही और माखन की चौरी करता फिरता है । फिर श्रीकृष्ण भोली - भाली राधा को कहते है चलो मैं तुम्हारी बात को स्वीकार कर लेता हूँ । मैं चोर ही सही तुम्हारा क्या चुरा लूँगा । चलो हम दोनों साथ में खेलने चलते है । सूरदास जी कहते है कि श्रीकृष्ण ने अपने रसिक स्वभाव के कारण भोली और सरल स्वभाव वाली राधा को अपने साथ खेलने के लिए राजी कर लिया । भला भोली राधा यह बात कैसे समझ पाती ।

विशेष :- 1) पद्यांश की भाषा सरल, सरस शब्दों में लिखी गई है

2) प्रस्तुत पद्यांश में ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है ।

3) प्रस्तुत पद्यांश में प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग हुआ है ।

4) प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने श्रीकृष्ण को रसिक स्वभाव वाला बताया है ।

5) प्रस्तुत पद्यांश में बताया गया है कि श्रीकृष्ण ने अपने रसिक स्वभाव से भोली राधा को उलझा लिया ।

16) गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या :

1. स्वतंत्रता - - - - - - - - - - रहेगी ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक "क्षितिज" से लक्ष्मीनारायण रंगा द्वारा रचित "अमरशहीद" नामक एकांकी से लिया गया है। इसमें बताया गया है कि किस प्रकार सागरमल गोपा अपने देश को आजाद कराने के लिए प्रयत्न करता है। वह अपनी कुर्बानी देने को भी तैयार है। वह कहता है स्वतंत्रता मैं अपने लिए नहीं चाहता हूँ मैं अपने देश के लिए चाहता हूँ।

व्याख्या → सागरमल गोपा जेलन करणीदान से कहता है कि स्वतंत्रता सेनानी आम का बगीचा लगाता है। उसे पता है कि उस ~~अ~~ वह आम उसे खाने के लिए नहीं मिलेगा। लेकिन फिर भी वह अपने खून-पसीने से सींचकर, वह उस आम को उगाता है ताकि वह आम अर्थात् कठिन परिश्रम का फल उसकी आने वाली पीढ़ियाँ भोग सके। स्वतंत्रता संग्राम भी इसी भावना के साथ लड़ा जाता है। भागीरथ भी गंगा अपने लिए नहीं लाया था। वह ~~भय~~ गंगा को इसलिए लाया था ताकि उसके पानी से उसकी आने वाली पीढ़ियाँ अर्थात् जनता अपनी प्यास बुझा सके। स्वतंत्रता संग्राम भी ऐसे ही लड़ा जाता है। स्वतंत्रता सेनानी स्वयं अपने प्राण त्यागने को तैयार है। लेकिन वह अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र कराना चाहता है। सागर मल गोपा कहता है स्वतंत्रता संग्राम एक लम्बा सफर है।

विशेष i) → गद्यांश में वीर रस विद्यमान है।

ii) → सागरमल गोपा कहता है कि स्वतंत्रता संग्राम किस भावना से लड़ा जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3) गद्यांश की भाषा सरल, सुबोध है।

4) गद्यांश में आम का और भागीरथ का उदाहरण देकर बताया है कि स्वतंत्रता संग्राम स्वयं के लिए नहीं लड़ा जाता है यह तो देश की जनता को स्वतंत्र करने के लिए होता है।

---

17) "लक्ष्मण - परशुराम" संवादो पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर "लक्ष्मण - परशुराम" संवाद तुलसीदास द्वारा रचित है। इसमें बताया गया है कि राजा जनक के दरबार में उनकी पुत्री सीता के स्वयं वर का आयोजन हुआ था। इसमें कहा गया था कि जो भी शिव के धनुष को उठा लेगा उसका विवाह सीता से होगा। राम ने जब धनुष उठाया तो पुराने होने के कारण वह टूट गया। तब परशुराम ने कहा - जिसने भी इस शिव धनुष को तोड़ा है सामने आ जाओ, नहीं तो सारे मारे जाओगे तब लक्ष्मण ने बिना किसी की अनुमति लिए परशुराम परशुराम पर व्यंग्य बाणों की वर्षा कर दी। वह कहने लगे - आप इस पुराने धनुष से इतना प्रेम क्यों है, हमने बचपन में बहुत सारे धनुष तोड़े है 'आपने उस समय तो हम पर क्रोध नहीं। तब परशुराम ने कहा - हे मन्दबुद्धि बालक तु इसे साधारण धनुष समझ रहा है। तु मेरे इस फरसे तो देख ले यह बहुत तीक्ष्ण है। मैंने बहुत बार शत्रुओं की भुजाएँ काटकर ब्राह्मणों को दान दे दी है।

तब लक्ष्मण कहते हैं - आप हमे क्या समझते हैं? हम भी कोई छुई - मुई के समान कोमल नहीं है। तब

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

लक्ष्मण ने कहा आप ब्राह्मण हो आपको मारने के पाप लगेगा। आपको हराने से अपयश मिलेगा। आप ब्राह्मण हो। लेकिन रघुवंशी को ब्राह्मण, गाय इन पर हिंसा नहीं करते है। इनको मारने से पाप लगेगा। लक्ष्मण कहते है - अगर आपको थोड़ी और प्रशंसा करनी है तो कर लीजिए।

ये शब्द सुनकर सभा में उपस्थित लोग हाय-हाय करके पुकारने लगे और लक्ष्मण को अनुचित कहने लगे। परशुराम ने ब्रहस्पति से कहा - मैं सिर्फ लिहाज कर रहा हूँ नहीं तो ये मन्दबुद्दि, मूर्ख बालक मरने के ही योग्य है। तब सभी कहने लगे लक्ष्मण अनुचित कह रहा है। फिर राम ने नेत्रों का संकेत देकर लक्ष्मण को चुप कराया।

---

18) ~~श्लोक~~ ~~अतं~~ "शिक्षा- प्रणाली बुरी होने के कारण क्या सारे स्कूल और कॉलिज बंद कर दिए जाएँ।" उक्त कथन ~~क~~ महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन" पाठ से लिया गया है। प्रस्तुत उक्ति का कहना है यदि शिक्षा प्रणाली सही नहीं है तो ~~र~~ क्या स्कूल और कॉलिज बंद कर दिए जाए। पाठ से लेखक कहते है कि पुराने ~~जमनो~~ जमाने में स्त्रियों को पढ़ाया जाता है। सीता, शकुन्तला, अत्रि ऋषि की पत्नी यह सभी विदुषी नारियाँ थी। अत्रि ऋषि की पत्नी "अनुसूया" शास्त्रात मे ब्रह्म वादियों के छक्के छुड़ा दिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

लेकिन आज के समय में भी कुछ लोग स्त्री शिक्षा का खण्डन करते है। वे कहते है कि - पढ़ लिखकर वे दूसरो का आदर नहीं करेगी। हाँ, हम यह कर सकते है कि स्त्रियों को कितनी शिक्षा मिलनी चाहिए, उन्हे कहाँ तक पढ़ाना चाहिए, कैसे पढ़ाना चाहिए लेकिन यह नहीं कहना चाहिए की स्त्री शिक्षा पाप है। शिक्षा में कभी अनर्थ नहीं होता है।

⇒ हाँ, अगर शिक्षा प्रणाली खराब है तो उसे सही करने का उपाय करना चाहिए। मेरे विचार है कि शिक्षा स्त्रियों के साथ पुरुषों को भी दी जानी चाहिए। अगर प्रणाली में दोष है तो उसको ठीक करना चाहिए। अगर प्रणाली में कोई दोष है तो सभी स्कूल और कॉलेज बन्द कर दिए जाए। ऐसा नहीं हो सकता है। लेखक कहता है पुराने समय में शिक्षा आश्रमों में दी जाती थी। शिष्य आश्रम में रहकर पढ़ता था, उनकी सेवा करता था। लेकिन आज के समय में यह बिल्कुल ठीक नहीं है। आज के समय में शिक्षा ग्रहण करने के लिए अनेक संस्थाएँ उपलब्ध है। जैसे स्कूल, कॉलिज आदि जगह है जहाँ पर रहकर विद्यार्थी अपनी पढ़ाई कर सकता है।

अगर शिक्षा प्रणाली में दोष है तो सभी स्कूल और कॉलिज बन्द नहीं करवा सकते है क्योंकि अगर ये सभी बन्द हो जाएगे तो बच्चे अध्ययन कैसे करेगे हमे पुरुषों के साथ स्त्रियें को भी शिक्षा दी जानी चाहिए समाज में आधी संख्या स्त्रियाँ है। अगर हम स्त्रियों को नहीं पढ़ाएगे तो आधा समाज पीछे रह जाएगा। और पूर्ण रूप से समाज विकसित नहीं हो पाएगा। दोष शिक्षा मे नहीं प्रणाली में होता है। अगर प्रणाली अच्छी नहीं है तो उसे बदलना है। इस प्रकार ये मेरे विचार है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

19) "उपजावे .... गुण राजिया ॥ उपर्युक्त सोरठे के माध्यम से कवि हमें संदेश देना चाहता है वाणी एक अनमोल उपकार है । हमें इसका उपयोग सोच समझ कर करना चाहिए । जिस प्रकार कोयल की मधुर आवाज़ सभी के मन को अच्छी लगती है और कौए की करकस आवाज सभी को बुरी लगती है । सिस इसी प्रकार हमें वाणी का उपयोग सोच समझकर करना चाहिए । अर्थात् हमें हमेशा मधुर आवाज़ में बात करनी चाहिए जिस प्रकार कोयल के आवाज़ मधुर, कौए की आवाज़ करकस लगती है । कौआ को कोई पसंद नहीं करता है । उसी प्रकार कड़वा बोलने वाले को भी कोई प्र पसंद नहीं करता है।

20) मातृ-वन्दना' कविता कवि निराला द्वारा रचित है। इसमें बताया गया है कवि माँ के चरणों में सब कुछ अर्पित कर देना चाहता है वह कहता है कि हे माँ आपके चरणों में अपने परिश्रम से जो भी फल करूँगा आपको अर्पित कर दूँगा । कवि कहता है कि मैं आपको मेरा तन, मन, धन सब समर्पित करना चाहता हूँ और चाहता हूँ कि आपकी नजर हमेशा मुझ पर लगी रहे । आपके आँसुओं को देखकर मैं आपको स्वतंत्र करा दूँगा और आप पर मैं अपना मस्तक, परिश्रम से अर्जित फल समर्पित करता हूँ)

21) "कन्यादान" कविता वर्तमान में मूल उद्देश्य भूल चुका है । न ही आज के समय ने कन्यादान का पुः वह पुण्य

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

भाव है जो पहले देखा जाता था और कन्यादान में देने वाला और लेने वाला दोनों ही इसका मूल भूल चुके है।
कन्या के साथ दान शब्द जोड़ना ही एक व्यंग्य से बढ़कर क्या हो सकता है। कन्या कोई वस्तु नहीं जो दान दी जाए।

→ आज के समय में जो कन्यादान एक अनुष्ठान मात्र बनकर रह गया है। कन्या को विवाह के समय पति को सौंप दिया जाता है। कन्या को दान नहीं दिया जाता है। यह तो बस एक व्यंग बनकर रह गया है। पुराने समय में जो पुण्य भाग था आज के समय में नहीं देखा जाता है।
आज के समय में "कन्यादान" स्त्री की गरिमा को गिराने वाला है।

---

12) लेखक ने देवालय बनाने का विचार त्याग दिया क्योंकि उसे बनाने में बड़े काँटे थे। उस समय में भारत पर अंग्रेजो का शासन था और उसके बाद में लह रहा था। इसलिए लेखक को लगा की अंग्रेजी शासन के प्रभाव से कोई मन्दिर की ओर मुख फेरकर भी नहीं देखेगा। लेखक कहता है कि अपना नाम बनाने के लिए कोई रास्ता मिल जाए तो बहुत अच्छा है।
→ लेखक के हिसाब से देवालय बनाने का विचार मूर्खता पूर्ण कोई मन्दिर की ओर मुँह फेरकर भी नहीं देखेगे। तो मेरा नाम अमर कैसे होगा। इसलिए लेखक ने देवालय बनाने का विचार त्याग दिया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

23) "भारत प्रकृति का खूबसूरत उपहार है।" यह कथन जयशंकर प्रसाद के अर्थ में बताया गया है। प्रकृति बहुत सुन्दर है। इस कथन को आखिरी चट्टान के आधार पर इस कथन का आशय है कि कन्याकुमारी बहुत सुन्दर जगह है। वहाँ सूर्योदय और सूर्यास्त का बहुत मनोरम वर्णन किया गया है। इसमें बताया गया है सूर्योदय होने का दृश्य बहुत सुन्दर है। सूर्योदय पहाड़ों की ओर से होता है। सूर्यास्त के समय सूर्य पानी में डूब जाता है। इसमें कई प्रकार के रंग दिखाई देते हैं जैसा - लाला लाल, सुनहरा, बैंगनी और फिर काली। यहाँ बड़े-बड़े रेत के टीले हैं उसे सेंड हील कहा जाता है।

---

24) संत दादू ने अपने शिष्यों को शिक्षा दी की राम का पल्ला कभी नहीं छोड़ना। हमेशा राम को याद रखना दादू के शिष्यों की संख्या कुल 152 मानी जाती है। दादू ने अपने शिष्यों को शिक्षा दी की अपन हमे अपने परिवार से माया - मोह नहीं रखना चाहिए। ये सब केवल भ्रम में डालने वाली बात है।

→ दादू अपने शिष्यों को उपदेश देते हैं हमें अपने सगे संबंधियों से ज्यादा मोह नहीं रखना चाहिए। ये हमसे छल कपट करते हैं। सन्त दादू कहते हैं संसार में हमारा सगा सम्बन्धी परमेश्वर ही है। हमें केवल उन्हीं की उपासना करनी चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए !

25) दादू पंथ के "पंचतीर्थ" के नाम है -1) कल्याणपुर, 2) सांभर, 3) आमेर 4) नराणा 5) भैराणा

26) संत पीपा निर्गुण भक्ति की उपासना करते है। उनके गुरु रामानन्द गुसाईं ने कहा - हम गरीब है राजाओं से हमारा क्या मेल। तब पीपा ने अपनी सम्पत्ति दान दे दी। पहले वे मूर्ति पूजक थे, देवी दुर्गा के उपासक, फिर उन्होंने कबीर की तरह निर्गुण भक्ति धारा की उपासना की। जिसके कारण राज व पाठ अर्थात् राज काज से उचट गया।

27) श्याम ने झूला झूलने के लिए गोपी को आमंत्रित किया। गोपी ने एक बार ~~स्वर~~ स्वप्न देखा। यह वहाँ की घटना है। तब गोपी स्वप्न में श्याम के साथ जाने के लिए उठती है उसकी नींद खुल जाती है।

28) खेतों की ~~मिट~~ मिट्टी ग्रीष्म ऋतु के कारण पथराई हुई है। इस समय ग्रीष्म ऋतु के कारण सब जगह सूखा पड़ गया है। जैसे ही किसान हल मिट्टी में डालता है तब मिट्टी पत्थर जैसे हो जाती है। इसलिए ग्रीष्म अर्थात् गर्मी के मौसम के कारण खेतों की मिट्टी पथरा गई है।

29) लेखक परिचय

(i) महाकवि निराला [1896 - 196 |

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" का जन्म बंगाल में हुआ था। इनका जन्म 1896 ई. को हुआ था। जन्म होते ही पिताजी का स्वर्गवास हो गया। बड़े-होते-होते माँ की भी मृत्यु हो गई। महामारी के कारण भाई, भाभी, पत्नी, चाचा का भी स्वर्गवास हो गया। फिर अपनी बेटी सरोज के मरने पर निराला अन्दर से झकझोर कर रख दिया। लेकिन फिर भी इन्होंने अपने चाहने से अपना जीवन बिताया। इनकी मृत्यु 1961 ई. में हुई थी। महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी इनका नाम था। लेकिन वे निराला उपनाम से रचनाएँ करते थे। इन्होंने अपने मन मुताबिक जीवन जीना ठीक समझा। महाकवि निराला बंगाल राज्य में जन्म हुआ था। इन्होंने कई रचनाएँ की है उनके कुछ नाम निम्नलिखित है :-

रचनाएँ - अभी न होगा मेरा अन्त, अन्धेरे बंद कमरे, तुमने कहा था, पुरानी जूतियों का कोरस, आखिर ऐसा मैंने क्या कह दिया, मातृ-वन्दना आदि।

(ii) देव (1730 - 1824)

देव का जन्म 1730 में हुआ था। इनके पिता का नाम बाबूप्रसाद

देव ने भी केशव की भाँति आचार्य कर्म का निर्वाह किया जाता है। देव ने अपनी रचनाएँ में अधिकतर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मुक्तक शैली का प्रयोग किया है । इन्होंने श्रृंगार रस का भी प्रयोग किया है । इन्होने अपनी रचनाओं में कवित्त छंद और सवैया छंद का प्रयोग किया गया है ।
देव के ग्रन्थों की संख्या 52 बताई जाती है लेकिन उसमें प्रमुख भावविलास, भवानीविलास, कुशलविलास, अष्टायाम, सुजानविनोद, प्रेमतरंग आदि प्रमुख कृतियाँ हैं ।
देव ने अपनी रचनाओं में कृष्ण के मन मोहक रूप के बारे में बताया है । देव की रचनाओं में श्रीकृष्ण के मोहक रूप का वर्णन किया है ।

"द्यौस रिया कवि देव इटावे वास"।

देव का जन्म इटावा और कुसमारा के बीच माना जाता है । अभी के समय इनके वंशज वर्तमान में इटावा में रहते हैं । देव की मृत्यु 1824 में हुई थी ।

कृतियाँ → भावविलास, भवानीविलास, कुशलविलास, अष्टायाम, सुजानविनोद, प्रेमतरंग आदि ।

30) निम्नांकित यातायात संकेतों का अर्थ :

(i) → एक ही रास्ता संकेत

(ii) → साईकिल पर प्रतिबंध

(iii) → होर्न पर प्रतिबंध

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(iv) (2m) → चौड़ाई सीमा

(8) स्वयं को तहसीलदार (भीण्डर) - - - - - - पत्र लिखिए।

राजस्थान जिलाधीश, ~~जोधपुर~~ उदयपुर

पत्र क्रमांक : 108/ रा. जि. उ. / 2018-19

प्रेषक :
तहसीलदार
(भीण्डर)

प्रापक :
राजस्व सचिव,
जिलाधीश,
~~जो~~ उदयपुर।

विषय : जलसंकट के कारण जल व्यवस्था हेतु अतिरिक्त बजट की मांग के लिए पत्र।

माननीय महोदय,

मैं आपका ध्यान हमारे तहसील की गंभीर संकट कपर आकर्षित करना चाहता हूँ। ~~हम~~ जैसा की आप जानते हैं कि आजकल गर्मी का मौसम चल रहा है तो यहाँ का तापमान बहुत बढ़ गया है जिसके कारण यहाँ पर जल संकट

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

की समस्या सामने आई है। वर्षा के कारण जो पानी आया था तापमान की वृद्धि के कारण सूख चुका है और यहाँ पर गंभीर जल संकट आ गया है। इसके कारण हमारे तेहसील के लोगों को बड़ी दिक्करत हो रही है। घरों में पानी की कमी हो गई है, नहाने के लिए पानी बहुत कम है। जानवरों के लिए जो तालाब, झिल थी सब सूख चुकी है। और इस समय पानी न होने के कारण कुछ काम नहीं होता है। जिस प्रकार रोटी, कपड़ा, मकान यह आदमी की तीन महत्त्वपूर्ण जरूरते होती है उसी प्रकार पानी भी बहुत जरूरी है। इसलिए मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ की आप जल व्यवस्था के अतिरिक्त बजट भी प्रदान करे। ताकि हम पानी को बचाने के लिए कुछ नियम अर्थात् कुछ स्किम चलाए ताकि पानी बच सके।

धन्यवाद।
दूरभाष नं. - 12....
नाम - राम

निबंध लेखन

2

(ग) यातायात सुरक्षा

(i) प्रस्तावना - जैसा की हम जानते है कि आजकल कितनी सड़क ~~दुर्घट~~ दुर्घटना सामने आ रही है। इसका एक महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि यातायात के नियमों का पालन न करना। जो व्यक्ति यातायात के नियमों का पालन नहीं

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

करेगा उसे कष्ट भोगना पड़ेगा। कितने लोग होते हैं जो गाड़ी चलाते समय हेलमेट का प्रयोग नहीं करते हैं। जो लोग हेल्मेट का उपयोग नहीं करते हैं उनकी जान जाने का खतरा बना रहता है। यातायात सुरक्षा बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इसके बिना व्यक्ति को शारीरिक पीड़ा या मानसिक पीड़ा हो सकती है। हमें गाड़ी चलाते समय वाहने की गति धीमी रखनी चाहिए। यातायात की सुरक्षा आज जरूरी भी है क्योंकि आज के समय में सड़क दुर्घटना बहुत बढ़ गई है। लगभग एक घण्टे में साठ दुर्घटना हो जाती है। इसका मतलब है कि हर मिनट एक दुर्घटना। यह बहुत ही विचारणीय है कि अगर पुलिस ने कुछ नियम बनाए हैं तो वह हमारे लिए ही है।

(ii) <u>यातायात के सामान्य नियम</u> - कुछ नियम हैं जिनका हमें पालन करना चाहिए।

1) गाड़ी शराब पीकर नहीं चलानी चाहिए।
2) सीट बेल्ट का प्रयोग करना चाहिए।
3) हेल्मेट का प्रयोग करना चाहिए।
4) वाहन की गति धीमी रखनी चाहिए।
5) पहाड़ों जगहों पर ध्यान से गाड़ी चलानी चाहिए।
6) यदि आँखों में नींद भरी हो तो गाड़ी नहीं चलानी चाहिए।
7) यदि रात में गाड़ी चलाने क'न आती हो तो रात में गाड़ी नहीं चलानी चाहिए।
8) यदि आपके पीछे कोई तेज वाहन आए तो

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उसे जाने देना चाहिए ।

9) प्रशिक्षु लाइसेंस 18 वर्ष की आयु में आवेदन होता है ।

10) मोड़ घुमावदार रास्ते पर सही तरीके से गाड़ी चलाना ।

11) गाड़ी चलाते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करना चाहिए

(iii) यातायात नियमों के पालन से लाभ

1) यातायात नियमों के पालन से होने वाले लाभ है कि अगर हम गति धीमी रखेंगे तो दुर्घटना होने की बहुत कम रह जाता है ।

2) अगर हम दो पहियों वाली गाड़ी का प्रयोग करते है तो हमे हेलमेट अवश्य पहनना चाहिए जिसके कारण हमारे शरीर का महत्त्वपूर्ण दिमाग किसी भी चोट से बच सकता है ।

3) हमे हेलमेट भी अच्छा पहनना चाहिए । अगर हम सस्ता हेलमेट पहनेंगे तो वह और भी घातक हो सकती है ।

4) मोबाइल का प्रयोग न करने से आपका ध्यान भंग नहीं होगा ।

5) यदि अगर हम शराब पीकर गाड़ी नहीं चलाएंगे तो हमारा मानसिक सन्तुलन ठीक रहेगा और हमें आर्थिक रूप से भी किसी प्रकार की हानि नहीं होगी ।

6) हमें अगर सभी यातायात नियमों का पालन करेंगे तो हमें किसी प्रकार का भुगतान नहीं करना होगा ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(iv) उपसंहार → हमें सरकार के द्वारा जो भी नियम बनाए गए उनका पालन करना चाहिए। सरकार ने जो नियम बनाए हैं वे सभी हमारी भलाई के लिए ही बनाए हैं। यदि हम गाड़ी तेज से चलाएंगे तो यह हमारे लिए ही हानिकारक होता है। अगर कोई जानवर या कोई गाड़ी आपके वाहन के बीच में आ जाए तो हमारी हम गाड़ी का ब्रेक लगाएंगे तो हम नीचे गिर जाए. गिर जाएंगे और हमें घातक कष्ट सहने पड़ेगा। इसलिए हमें सभी नियमों का पालन करना चाहिए। रोड़ रेज के मामलों से दूर रहना चाहिए तो बहुत घातक रूप ले सकते हैं। उस समय छोटी-सी बात भी झगड़े का कारण बन सकती है। हमें शराब नहीं पीनी चाहिए। जो हमारे शरीर को बहुत नुकसान पहुँचाती है।

→ अगर हमारे शरीर में 30 मीलीग्राम अल्कोहल 100 मीलीग्राम पर मिलती है तो हमें जुर्माना देना पड़ सकता है।

समाप्त